

## 46544 - वित्र की नमाज़ के वर्णित तरीकों का विवरण

### प्रश्न

वित्र की नमाज़ अदा करने का सर्वश्रेष्ठ तरीका क्या है ?

### विस्तृत उत्तर

हर प्रकार की प्रशंसा और गुणगान केवल अल्लाह तआला के लिए योग्य है।

वित्र की नमाज़ अल्लाह तआला की निकटता प्राप्त करने के कार्यों में से एक महान कार्य है, यहाँ तक कि कुछ विद्वानों ने – और वे अहनाफ हैं - इसे वाजिब (अनिवार्य) कहा है। परंतु सही बात यह है कि यह मुअक्कदा सुन्नतों में से है, जिसका एक मुसलमान व्यक्ति को नियमित रूप से पालन करना चाहिए और उसे छोड़ना नहीं चाहिए।

इमाम अहमद रहिमहुल्लाह कहते हैं : "जो कोई भी वित्र को छोड़ देता है, वह एक बुरा आदमी है, उसकी गवाही को स्वीकार नहीं किया जाना चाहिए।" और यह वित्र की नमाज़ की ताकीद (निश्चिति) को इंगित करता है।

वित्र की नमाज़ के तरीके के बारे में बात को हम निम्नलिखित बिंदुओं में सारांशित कर सकते हैं :

वित्र की नमाज़ का समय :

जब इन्सान इशा की नमाज़ पढ़ ले, तो उसी समय से वित्र की नमाज़ का समय आरम्भ हो जाता है, अगरचे इशा की नमाज़ मग़ि़ब की नमाज़ के साथ इकट्ठा कर पढ़ी गई हो, और उसका समय फज़्र के उदय होने तक रहता है। क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमान है :

“إِنَّ اللَّهَ فَدُّ أَمَدَكُمْ بِصَلَاةٍ وَهِيَ الْوَتْرُ جَعَلَهُ اللَّهُ لَكُمْ فِيمَا بَيْنَ صَلَاةِ الْعِشَاءِ إِلَى أَنْ يَطْلَعَ الْفَجْرُ”

"निःसंदेह अल्लाह ने तुम्हें एक (अतिरिक्त) नमाज़ प्रदान की है, और वह वित्र है, जिसे अल्लाह ने तुम्हारे लिए इशा की नमाज़ और फज़्र उदय होने के बीच में निर्धारित किया है।" इस हदीस को तिर्मिज़ी (हदीस संख्या: 425) ने रिवायत किया है और शैख अल्बानी ने "सहीहुत्तिर्मिज़ी" में इसे सहीह करार दिया है।

क्या वित्र को प्रथम समय में पढ़ना अफज़ल है या उसे विलंब कर के पढ़ना बेहतर है ?

सुन्नत इस बात पर दलालत करती है कि जिस व्यक्ति को रात के आखिरी हिस्से में जागने की उम्मीद हो तो उसके लिए वित्र को विलंब करके पढ़ना अफज़ल (सर्वश्रेष्ठ) है, क्योंकि रात के अंतिम हिस्से की नमाज़ सर्वश्रेष्ठ है, और इसमें फरिश्ते उपस्थित होते हैं। और जिस व्यक्ति को यह भय हो कि वह रात के आखिरी हिस्से में नहीं उठ पाएगा, तो वह सोने से पहले वित्र पढ़ ले। इसका प्रमाण जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु की यह हदीस है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया :

“مَنْ خَافَ أَنْ لَا يَقُومَ مِنْ آخِرِ اللَّيْلِ فَلْيُوتِرْ أَوَّلَهُ وَمَنْ طَمِعَ أَنْ يَقُومَ آخِرَهُ فَلْيُوتِرْ آخِرَ اللَّيْلِ فَإِنَّ صَلَاةَ آخِرِ اللَّيْلِ مَشْهُودَةٌ وَذَلِكَ أَفْضَلُ”

(जिस व्यक्ति को यह डर हो कि वह रात के आखिरी हिस्से में नहीं उठ सकेगा, तो उसे चाहिए कि वह रात के शुरू हिस्से में वित्र की नमाज़ पढ़ ले। और जिस को रात के अंत में उठने की उम्मीद हो, वह रात के अंत में वित्र की नमाज़ पढ़े। क्योंकि रात के अंतिम हिस्से की नमाज़ में फरिश्ते हाज़िर होते हैं, और यह सर्वश्रेष्ठ है।" इस हदीस को मुस्लिम (हदीस संख्या: 755) ने रिवायत किया है।

नववी रहिमहुल्लाह कहते हैं : "और यही सही दृष्टिकोण है, और इसके अतिरिक्त शेष सामान्य हदीसों के अर्थ को इसी सहीह स्पष्ट तफसील (विस्तार) के आधार पर निर्धारित किया जायगा। इसी अध्याय से यह हदीस भी है: "मेरे खलील (दोस्त) ने मुझे सलाह दी है कि मैं वित्र पढ़ कर ही सोया करूँ।" यह हदीस उस व्यक्ति के हक़ में है जिसे (सोने के बाद) जागने का विश्वास नहीं है।" अंत हुआ। शर्ह मुस्लिम (3/277).

उसकी रक़अतों की संख्या :

कम से कम वित्र एक रक़अत है। इसका प्रमाण नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह फरमान है :

"الْوِتْرُ رَكْعَةٌ مِنْ آخِرِ اللَّيْلِ"

"वित्र रात के अंत में एक रक़अत है।" इसे मुस्लिम (हदीस संख्या : 752) ने रिवायत किया है। तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमान है :

"صَلَاةُ اللَّيْلِ مَثْنَى مَثْنَى فَإِذَا خَشِيَ أَحَدُكُمْ الصُّبْحَ صَلَّى رَكْعَةً وَاحِدَةً تُوتِرُ لَهُ مَا قَدْ صَلَّى"

"रात की नमाज़ दो-दो रक़अत है। अतः जब तुम में से किसी को सुबह होने का डर हो तो वह एक रक़अत पढ़ ले, जो उसकी पढ़ी हुई नमाज़ को वित्र (विषम) बना देगी।" इस हदीस को बुखारी (हदीस संख्या: 911) और मुस्लिम (हदीस संख्या: 749) ने रिवायत किया है।

अतः इन्सान अगर एक ही रकूअत वित्र अदा करता है तो उसनेसुन्नत का पालन किया ... जबकि वित्र की नमाज़ तीन, पाँच, सात एवं नौ रकूअत भी जायज़ है।

यदि वह तीन रकूअत वित्र अदा करे तो इसके निम्नलिखित दो तरीके हैं और दोनों तरीके धर्मसंगत हैं :

प्रथम तरीका : तीन रकूअत एक साथ एक तशहूद से पढ़े। आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं :

”كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا يُسَلِّمُ فِي رَكَعَتِي الْوَتْرِ”

"नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वित्र की दो रकूअतों में सलाम नहीं फेरते थे।" और एक रिवायत के शब्द यह हैं :

”كَانَ يُوتِرُ بِثَلَاثٍ لَا يَفْعُدُ إِلَّا فِي آخِرِهِنَّ”

"नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तीन रकूअत वित्र पढ़ते थे जिनके केवल अंत ही में आप बैठते थे।" इसे नसाई (2/234) और बैहकी (3/31) ने रिवायत किया है। इमाम नववी रहिमहुल्लाह "अल-मजमूअ" (4/7) में लिखते हैं : इसे नसाई ने हसन सनद के साथ और बैहकी ने सहीह सनद के साथ रिवायत किया है। अंत हुआ।

दूसरा तरीका :

दो रकूअत पढ़कर सलाम फेर दे, फिर एक रकूअत वित्र पढ़े। जैसा कि इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है कि : "वह अपनी दो रकूअत को सलाम के द्वारा एक रकूअत से अलग करते थे। (अर्थात वित्र की दो रकूअतों के बाद सलाम फेर कर एक रकूअत अलग पढ़ते थे) तथा उन्होंने बताया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ऐसा ही किया करते थे।" इसे इब्ने हिब्बान (हदीस संख्या: 2435) ने रिवायत किया है, और हाफिज़ इब्ने हजर रहिमहुल्लाह फत्हुल बारी (2/482) में कहते हैं कि : "इसकी सनद क़वी (मज़बूत) है।" अंत हुआ।

लेकिन अगर वह पाँच या सात रकूअत वित्र पढ़ता है तो ये सब मिलाकर एकसाथ पढ़ी जाएंगी, और वह उनके अंत में केवल एक तशहूद करेगा और सलाम फेर देगा। जैसा कि आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से वर्णित है, वह कहती हैं :

”كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَصَلِّي مِنَ اللَّيْلِ ثَلَاثَ عَشْرَةَ رَكَعَةً يُوتِرُ مِنْ ذَلِكَ بِخَمْسٍ لَا يَجْلِسُ فِي شَيْءٍ إِلَّا فِي آخِرِهَا”

"अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रात को तेरह रकूअत पढ़ते थे, उन में पाँच रकूअत वित्र पढ़ते थे जिनके केवल अंत ही में बैठते थे।" इसे मुस्लिम (हदीस संख्या: 737) ने रिवायत किया है।

तथा उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है वह कहती हैं :

”كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُوتِرُ بِخَمْسٍ وَبَسِيعٍ وَلَا يُفْصَلُ بَيْنَهُنَّ بِسَلَامٍ وَلَا كَلَامٍ“

"नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वित्र की नमाज़ पाँच और सात रक़ाते पढ़ते थे, जिनके बीच सलाम या बातचीत के द्वारा विच्छेद (पार्थक्य) नहीं करते थे।" इसे अहमद (6/290) और नसाई (हदीस संख्या: 1714) ने रिवायत किया है। इमाम नववी कहते हैं : इसकी सनद "जैयिद" है। "अल-फत्हुर्रब्बानी" (2/297), और शैख अल्बानी ने "सहीहुन-नसाई" में इसे सहीह करार दिया है।

और अगर वह नौ रक़ात वित्र पढ़े तो ये सब लगातार एकसाथ पढ़ी जाएंगी, और वह आठवीं रक़ात में तशहूद के लिए बैठेगा, फिर खड़ा हो जाएगा और सलाम नहीं फेरेगा, फिर नौवीं रक़ात में तशहूद के लिए बैठेगा और सलाम फेर देगा। जैसा कि आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से सहीह मुस्लिम (हदीस संख्या: 746) में वर्णित है कि :

”أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يُصَلِّي تِسْعَ رَكَعَاتٍ لَا يَجْلِسُ فِيهَا إِلَّا فِي الثَّامِنَةِ فَيَذْكُرُ اللَّهَ وَيَحْمَدُهُ وَيَدْعُوهُ ثُمَّ يَنْهَضُ وَلَا يُسَلِّمُ ثُمَّ يَقُومُ“  
”فِيصَلِّ التَّاسِعَةَ ثُمَّ يَقْعُدُ فَيَذْكُرُ اللَّهَ وَيَحْمَدُهُ وَيَدْعُوهُ ثُمَّ يُسَلِّمُ تَسْلِيمًا يُسْمِعُنَا“

"नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नौ रक़ात नमाज़ (वित्र) पढ़ते थे, जिनमें आप आठवीं रक़ात में बैठते और अल्लाह का ज़िक्र करते, उसकी प्रशंसा करते और उससे दुआ मांगते, फिर सलाम फेरे बिना खड़े हो जाते और नौवीं रक़ात पढ़ते, फिर बैठ जाते और अल्लाह का ज़िक्र करते, उसकी प्रशंसा करते और उससे दुआ करते। फिर हमें सुनाकर सलाम फेरते थे।"

और अगर वह ग्यारह रक़ात (वित्र) पढ़े, तो हर दो रक़ात पर सलाम फेर दे और उन्हें एक रक़ात से वित्र बना ले।

वित्र में पूर्णता का न्यूनतम स्तर और उस में क्या पढ़ा जाएगा :

वित्र में कम से कम पूर्णता यह है कि वह दो रक़ात पढ़ कर सलाम फेर दे, फिर एक रक़ात पढ़े और सलाम फेर दे। तथा तीनों रक़ातों को एक सलाम के साथ पढ़ना भी जायज़ है, परंतु उन्हें एक तशहूद के साथ पढ़ेगा, दो तशहूद के साथ नहीं, जैसा कि ऊपर गुज़र चुका।

तीनों रक़ातों में से पहली रक़ात में "सब्बेहिस्मा रब्बिकल आला" पूरी सूरा पढ़े, दूसरी रक़ात में सूरा "अल-काफिरून" और तीसरी रक़ात में सूरा "अल-इस्लास" पढ़े।

इमाम नसाई (हदीस संख्या: 1729) ने उबै बिन कअब रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है कि वह कहते हैं :

”كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقْرَأُ فِي الْوُتْرِ بِسَبِّحِ اسْمِ رَبِّكَ الْأَعْلَى وَقُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ وَقُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ“

"अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वित्र में "सब्बेहिस्मा रब्बिकल आला" और "कुल या अय्युहल काफिरून"



और “कुल हुवल्लाहु अहद” पढ़ते थे।” शैख अल्बानी ने सहीहुन्नसाई में इसे सहीह करार दिया है।

वित्र की नमाज़ के उपर्युक्त सभी तरीके सुन्नत से प्रमाणित हैं। और सबसे उत्तम यह है कि मुसलमान व्यक्ति हमेशा एक ही तरीके पर नमाज़े वित्र न पढ़े, बल्कि कभी इस तरीके से और कभी दूसरे तरीके से पढ़े .. ताकि सुन्नत के सब तरीकों पर अमल हो जाए।

और अल्लाह तआला ही सब से अधिक ज्ञान रखता है।